

236  
22

पञ्जावली पेश हुई। प्राणी व वहीन प्राणी  
अनुपासित। बार-बार आस्थाज दिनवारी  
जाने पर भी प्राणी की ओर से कोई  
उपासित नहीं। अतः प्राणी का प्राण  
अज्ञान द्वारा अज्ञान परी में स्वारिजफिक  
जाता है। पञ्जावली में सत्तु शुभा होकर  
नम्र से का होकर दाता दीव्य है।

R

(बृजेश कुमार)  
मुख्य अधिकारी  
नामकाथाना (सीकर)

वि. सं. 10/10/1950  
10/10/1950